NJESR/August-2023/Volume-5/Issue-8 E-ISSN-2582-5836
DOI-10.53571/NJESR.2023.5.8.54-60

अन्धा युग नाटक कीतात्त्विक समीक्षा

डॉ. अरुण कुमार

असिसिस्टेंट प्रोफेसर,हिन्दीविभागराजकीय रजा स्नातकोत्तर महाविद्यालय, रामपुर

2. आकाश,

एम. ए. हिन्दी

सारांशदृधर्मवीर भारती द्वारा रचित अंधा युगगीति नाट्य का प्रकाशन 1955 ई० में हुआ था। इस काव्य नाटक में लेखक ने महाभारत के युद्धोपरांत उत्पन्न सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, राजनीतिक एवं मानवीय मूल्यों के विघटन का चित्रण किया है। महाभारत अपने समय का विश्व युद्ध ही था उसे धार्मिक एवं ऐतिहासिक ग्रंथ, दंतकथाएँ, लोककथाएँ अंतरकथाएँअथवा अन्य ग्रंथ चाहे धर्म युद्ध कहें अथवा नूतन समाज के निर्माण का महायज्ञ। महाभारत एक ऐसा यज्ञ है जिसने न जाने कितने वीरों को आत्माहुति देनी पड़ी। भीष्म पितामह, गुरु द्रोण, कृपाचर्य, युयुत्सु अश्वत्थामा आदि अनेक महान आदर्श को धारण करने वाले वीर धृतराष्ट्र एवंगांधारी के राजसत्ता एवं पुत्रा मोह की आग में जलकर भस्म हो गए। इस नाटक में भारती जी ने वाह्य घटनाओं की अपेक्षा उससे उत्पन्न होने वाली सामाजिक और सांस्कृतिक विषमताओं, विसंगतियों, विकृतियों तथा असंतुलन पर ध्यान केंद्रित किया है। वे कहते हैं –

"यह अंधा युग अवतरित हुआ
जिसमें स्थितियाँ,मनोवृत्तीयाँ, आत्माएँ
सब विकृत हैं
है एक बहुत पतली डोर मर्यादा की
पर वह भी उलझी है दोनों ही पक्षों में
X X X
यह कथा उन्हीं अंधों की है,
या कथा ज्योति की है अंधों के माध्यम से"[1]

कथा वस्तु, संवाद, पात्रों का चरित्र चित्रण भाषा शैली एवं अभिनेयता की दृष्टि से यह काव्य नाटक अत्यंत प्रासंगिक है इसका ताना–बाना भले ही महाभारत कालीन हो किंतु घटनाएँ एवं उससे उत्पन्न विसंगतियाँ समकालीन परिवेश में भी उतनी ही प्रासंगिक हैं। प्रत्येक युग में महायुद्ध का परिणाम वही होता है जिसका चित्रण धर्मवीर भारती ने इस नाटक में किया है।

शब्द कुंजी – आसन्न, कुंजर, मर्मांतक, मर्यादित, कुंठा, आत्मग्लानि, दुष्परिणाम, लोलुपता, अहंग्रस्त, दुर्विनीत, कल्याणकारी, धर्मनीतिज्ञ, सर्वोपरि।

प्रस्तावना –हिंदी साहित्य के बहुमुखी प्रतिभा सम्पन्न धर्मवीर भारती कवि, उपन्यासकार,कहानीकार, नाटककार, संपादक एवं सामाजिक विचारक के रूप में प्रसिद्ध है। इनका आधुनिक हिंदी साहित्य की लगभग सभी विधाओं पर समान अधिकार था। इनकी रचनाओं में 'ठंडा लोहा','कनुप्रिया' जैसी कविताएं,'गुनाहों का देवता','सूरज का सातवाँ घोड़ा' जैसे प्रसिद्ध उपन्यास,'ठेले पर हिमालय','पश्यंती' जैसे निबंध,'युद्ध यात्रा' जैसे रिपोर्ताज,'अन्धा युग' जैसे गीतिनाटक 'यात्राचक्र'जैसे यात्रावृत्तान्त एवं मानवीय मूल्यों और साहित्य (आलोचना) आदि प्रसिद्ध है। धर्मवीर भारती जी के हिंदी साहित्य में अमूल्य योगदान के कारण उन्हें 1972 में पद्मश्री से सम्मानित किया गया।

कथावस्तु – अंधायुग नाटक की कथावस्तु में इतिहास और कल्पना का अद्भुत समन्वय है। इसके कथावस्तु में तद्युगीन,सामाजिक, सांस्कृतिक एवं राजनीतिक परिस्थितियों का सजीव चित्रण है जैसेममता का अंधापन, भय का अंधापन, अधिकारों का अंधापन आदि देखने को मिलता है। युद्ध के पूर्व व पश्चात्अंधापन ही व्याप्त रहता है। युद्ध के पश्चात् अंधियारा और अधिक गहरा होता जाता है। लेखक ने अंधायुगनाटक के माध्यम से सत्ताधारियों पर व्यंग्य किया है। यह एकगीतिनाटक है जिसका विभाजनपाँचअंकों तथा आठ भागों में हुआ है,जिन्हें भारतीजी ने अंधायुग, कौरव नगरी, पशु का उदय, अश्वथामा का अर्द्धसत्य, पंख पहिया और पट्टियाँ,गान्धारी का शाप, विजयरूएक क्रमिक आत्महत्या, प्रभु की मृत्यु

Created by Universal Document Converter

नाम से व्यंजित किया है। लेखक ने कथा का सार महाभारत के 18 वें दिन की संध्या से लेकर प्रभास तीर्थ में कृष्ण की मृत्यु के क्षण तक उचित प्रतीक व शिल्प के माध्यम से गीतात्मक रूप में प्रस्तुत किया है। नाटक का आरंभ अन्धा युग की स्थापना से होता है, जिसमें मंगलाचरण के साथ उद्घोषणा की जाती है कि भविष्य में धर्म का हास होगा और पृथ्वी का क्षय होगा केवल अधर्म और आडंबर का वातावरण छाया रहेगा। भारतीजी नाटक में टूटती मर्यादा, विवेक की कुंठा,ममता का अंधापन,धर्म के रक्षकों द्वारा धर्म के पथ से विचलित होकर विजय हेतु अधर्मनीति अपनाना आदि घटनाओं से उपजा अंधापन का उल्लेख उचित ढंग से किया है।

आपसी कलह से उत्पन्न युद्ध के कारण साधारण मनुष्य को अत्यंत दुरूख और त्रास का सामना करना पड़ता है। सामान्य व्यक्ति को युद्ध में पक्ष और विपक्ष की जीत या हार से कोई सरोकार नहीं होता। वह तटस्थ होते हैं और अपना कार्य पूर्ण निष्ठा से करते हैं। इसी उपलक्ष्य में दोप्रहरी अपने कार्य का निर्वाह जीवन पर्यंत करते हैं। प्रहरी साधारण मनुष्य का प्रतिनिधित्व करते हैं, जिन्हें युद्ध से कोई लाभ नहीं होता, केवल युद्ध के परिणामोंको अन्धा बनकर झेलना पड़ता है। लेखकधृतराष्ट्र के माध्यम से मन के अंधेपन को दर्शाता है केवल आंख के अंधेपन के कारण नहीं अपितु मन के अंधेपन के कारण धृतराष्ट्र के पुत्र इतने अधर्मी हो जाते हैं की महाभारत जैसी युद्ध की स्थिति उत्पन्न हो जाती है। विदुर, द्रोण, भीष्म जैसे बुद्धिजीवीहोते हुए भी स्थिति में कोई परिवर्तन नहीं कर पाते और न चाहते हुए भी अधर्म के पक्ष में रहने को बाध्य होते हैं। इसी परिप्रेक्ष्य में विदुर कहते है–

"मर्यादा मत तोड़ो

तोड़ी हुई मर्यादा

कुचले हुई अजगर–सी

गुंजलिका में कौरव–वंश को लपेटकर

सूखी लकड़ी–सा तोड़ डालेगी।"[2]

विदुरसमर्पण कोमुक्ति का आधार मानते हैं।वेधृतराष्ट्र को सांत्वना देते हैं कि वह इस ज्ञान कों प्राप्त करेंएवं स्वयं को ईश्वर को समर्पित करें औरभय से मुक्ति पाएं। किंतु धृतराष्ट्र ज्ञान से उत्पन्न भय की कल्पना करते हैं, तब विदुर कहते हैंकि –

"भय है तो

ज्ञान है अधूरा अभी।

प्रभु ने कहा था..

ज्ञान जो समर्पित नहीं है

अधूरा है।"[3]

भारती जी गान्धारी के माध्यम से तत्कालीन माताओं की ममता से उपजे अंधेपन, दुरूख, विवेक,मर्यादा,भक्ति और नैतिकतापर गहरा प्रहार करते हैं। गान्धारी विवेकशील हैं वह अपने पुत्रों के अवगुणों को समझती है, किंतु वह उचित समय पर उचित निर्णय लेने में असमर्थ होती हैं। वह कहती हैं–

"मैंने यह बार–बार देखा था

निर्णय के क्षण में विवेक और मर्यादा

व्यर्थ सिद्ध होते आये हैं सदा"[4]

गान्धारी के शोक से उपजे क्रोध के कारण वह श्रीकृष्ण को कटुवचन कहती हैं, लेखक नेगान्धारी के माध्यम से माँ के शोकाकुल हृदय को व्यक्त करते हुए ईश्वर से लोहालेने की घटना का वर्णन किया। लेखक ने उज्ज्वल भविष्य की निर्मिति के लिए ज्योतिष विद्या और नक्षत्रों की गति का ईश्वर द्वारा उलटफेर कर भविष्य को झूठा सिद्ध करते हुए प्रस्तुत किया है। वृद्धयाचक ने नक्षत्रों की गति वकौरव पक्ष में अधिक शक्ति केबल पर विजय की घोषणा किया किन्तु उसकी यह भविष्यवाणी झूठी सिद्ध होती है। तब याचक कहता है–

"मैं हूँ वही

आज मेरा विज्ञान सब मिथ्या ही सिद्ध हुआ।

Created by Universal Document Converter

सहसा एक व्यक्ति

ऐसा आया जो सारे

नक्षत्रों की गति से भी ज्यादा शक्तिशाली था।"[5]

युद्ध के भयानक परिणामों का साधारण मनुष्य पर गहरा प्रहार प्रभाव पड़ता है। इस युद्ध के कारण अश्वत्थामा जैसे ब्राह्मण का हृदय कटु हो जाता है, उसमें पशुता का उदय हो जाता है, जिसके कारण वह किसी की भी हत्या के लिए आतुर हो जाता है। उसकी इस दशा का कारण युधिष्ठिरको कहा जा सकता हैयुधिष्ठिर के कथन पर गुरु द्रोण ने शस्त्रों कोत्यागदिया तथा धृष्टद्युम्न ने उनका वध कर दिया। जिसके कारण अश्वत्थामा में पशुता का उदय हुआ तथा वह वध के लिए आतुर हो जाता है। वह प्रथम संजय का गला दबाता है किंतु कृपाचार्य व कृतिवर्मा संजय को बचा लेते हैं फिर वृद्धयाचक को दबोच कर वह घसीटता हुआ नेपथ्य पर ले जाता है और मार देता है। वह कहता है–

"वध मेरे लिए नहीं रही निति

वह हैअब मेरे लिए मनोग्रन्थि "[6]

भारती जी ने युयुत्सुको मानसिक पीड़ा से ग्रसित पात्र के रूप में प्रस्तुत किया है।युयुत्सु आत्मग्लानी से भरा हुआ प्रतीत होता है। वह कौरवों का भाई होते हुए भी धर्म का पक्ष चुनता है, पांडवों की ओर से युद्ध करता है तथा अपने भाइयों की हत्या का कारण बनता है। जब वह महल में प्रवेश करता तो उसकी माता, सभी नगरवासी उसे घृणा करते हैं, प्रहरी उससे भयभीत होते हैं, माता गान्धारी भी उसे कटु वचन कहती है जिसके कारण उसे अत्यंत पीड़ा होती है। उसे लगता है कीउसे असत्य से समझौता कर अधर्म का पक्ष लेना चाहिए था। विदुर उसे समझाते हैं, तब वह कहता है–

"अंतिम परिणति में

दोनों जर्जर करते हैं,

पक्ष चाहे सत्य का हो

अथवा असत्य का !"[7]

युद्ध के भयानक दृश्यों में भीम के व्यक्तित्व मे पशुता देखने को मिलती है। भीम और दुर्योधन केद्वंदमें भीम अधर्म सेदुर्योधनकी जंघा पर आघात करते हैं, उसके माथे पर पांव रखते हैं, दुर्योधन की पशु की तरह हत्या करते हैं। इस प्रकार केवल अँधियारा ही अँधियारासंपूर्ण नाटक में व्याप्त रहता है।

उल्लू द्वारा योजना बनाकर कौए की हत्या का दृश्य देखकर अश्वत्थामापांडवों की हत्या की योजना बनाता है और पांडवों के शिविर में जाकर रक्तपात मचा देता है। इस कृत्य से माता गान्धारी अत्यंत प्रसन्न होती है। वह अश्वत्थामा को देखने के लिए उत्सुक होती है। वह संजय की सहायता से अश्वत्थामा को देखना चाहती है, किंतु अंधों को सत्य दिखाने में संजय असफल होते हैं। संजय की दिव्यदृष्टि की समयसीमा समाप्त हो जाती है। माता अश्वत्थामा को देख नहीं पाती। अश्वत्थामा स्वयं के बचाव हेतु ब्रह्मास्त्र नभ में छोड़ देता है। अर्जुन अश्वत्थामा के प्रहार को विफल करने हेतुब्रह्मास्त्र का आह्वान कर उसे नभ में छोड़ देता है, दोनों ब्रह्मास्त्र आपस में टकराए तो समग्र संसार का नाश हो जाएगा। इस भयसेव्यास आकाशवाणी द्वारा चेतावनी देते हैं, जिससे अर्जुन अपने ब्रह्मास्त्र को वापस कर लेता है, परंतु अश्वत्थामा वापस करने में असमर्थ होता है उसे ब्रह्मास्त्र वापस करने की विद्या का ज्ञान नहीं होता। तब वह अपने ब्रह्मास्त्र को उत्तर की ओर छोड़ देता है। इस कृत्य से गान्धारी बहुत प्रसन्न होती है। व्यास अश्वत्थाम ाको पशु की संज्ञा देते हैं और वे कहते हैं–

"यदि ये लक्ष्य सिद्ध हुआ तो नरपशु !

तो आगे आने वाली सर्दियों तक

पृथ्वी पर रसमयवनस्पति नहीं होगी

शिशु होंगे पैदा विकलांग और कुंठाग्रस्त

सारी मनुष्य जाति बौनी हो जाएगी

जो कुछ भी ज्ञान संचित किया है मनुष्य ने

Created by Universal Document Converter

सतयुग में, त्रेता में,द्वापर में

सदा–सदा के लिए होगा वलीन वह

गेहूँ की बालें में सर्प फुफकारेंगे

नदियों में बह–बह कर आयेगी पिछली आग।"[8]

भारती जी मर्यादित आचरण को अधिक महत्त्वपूर्ण मानते हैं।गान्धारी दुर्योधन के अस्थिपंजर, कवच को स्पर्श कर दुरूखी होकर विचार करती है, उनके द्वारा निर्मित कवच भी दुर्योधन का रक्षण नहीं कर सका, तब विदुर कहते हैं –

"कवच यह मिथ्या था

केवल स्वयं किया हुआ

मर्यादित आचरण कवच है

जो व्यक्ति को बचाता है

माता....."[9]

गान्धारी अपने सभी पुत्रों की मृत्यु के कारण अत्यधिक दुरूखी होती हैं और विशाद हृदय से क्रोधित होकर श्री कृष्ण और उनके संपूर्ण वंश को आपसी कलह के कारण स्वयं श्री कृष्ण द्वारा नष्ट करने का शाप देती है। वह कहती हैं, आपका अंत भी इसी प्रकार होगा। जिस प्रकार मेरे वंश का अंत हुआ है, मेरा हृदय विषादग्रस्त है,उसी प्रकार आपका हृदय विषादग्रस्त होगा। आप स्वयं अपने वंश का नाश करके जंगल में भटकते फिरेंगे तथा किसी भी साधारण व्याध के हाथों मारे जाएंगे।

"सारातुम्हारा वंश

इसी तरह पागल कुत्तों की तरह

एक–दूसरे को परस्पर फाड़ खायेगा

तुम खुद उनका विनाश करके कई वर्षों बाद

किसी घने जंगल में

साधारण व्याधि के हाथों मारे जाओगे

प्रभु हो

पर मारे जाओगे पशुओं की तरह।"[10]

भारती जी ने समस्त माताओं की पीड़ा गान्धारी के माध्यम से व्यक्त की है। गान्धारी कृष्ण को अपना पुत्र मानती हैं, जब गान्धारी का क्रोध शांत होता है, तब वे स्वयं को कोशती हैं।कृष्ण से उनके शाप के लिए क्षमा मांगती हैं, कृष्ण से शाप को विफल करने को कहती है, किंतु श्रीकृष्ण उनके शाप को स्वीकार कर लेते हैं, उसी क्षण नक्षत्रों की ज्योति मंद हो जाती है। कृष्ण गान्धारी से कहते हैं कि जब तक मैं जीवित हूँ तब तक आप पुत्र हीन नहीं हैं।

भारती जी ने अन्धायुग के माध्यम से तत्कालीन परिस्थिति प्रदर्शित किया है। युद्ध में विजयी पक्ष को भी कोई लाभ नहीं होता। सभी योद्धा कुंठा, अभिमान,आत्मग्लानी से ग्रसित हैं। युधिष्ठिरके माध्यम से भारती जी मर्यादित, बुद्धिजीवी की मनोदशा का चित्रण करते हैं। युद्ध के पश्चात्युधिष्ठिर, दुरूखी, शोकाकुल व भय में रहते हैं कि जब श्री कृष्ण का देहावसान होगा, तब पृथ्वी पर व्याप्त अंधेपन से मनुष्य जाति को कौन बचाएगा। भीम द्वारा अपमानित होकर, आत्मग्लानी के कारण युयुत्सु आत्महत्या कर लेते हैं,वन में आग लगने से गान्धारी, धृतराष्ट्र,कुन्ती जलकर भस्म हो जाते हैं। यादव वंश में कलह बढ़ जाती है, लेकिन कृष्ण साक्षात् ईश्वर होते हुए भी अपने वंश में उत्पन्न आंतरिक कलह को रोक नहीं पाते। वह स्वयं अपनेवंश नाश करके जंगल में वास के लिए चले जाते हैं। ईश्वर होते हुए श्रीकृष्ण अंधेरे पर विजय नहींकरपाते हैं। अर्थात् पूर्ण रूप से नाटक में अंधेरा ही गहरा होता जाता है। समय का चक्र चलता है और वह क्षण आता है जब कृष्ण की मृत्यु होती है। कृष्ण एक वृक्ष की शाखा पर लेटे बांसुरी बजा रहे थे। एक व्याध ने उनके पैर को मृग समझकर बाण से घायल कर दिया। अश्वत्थामा यह दृश्य देख रहा था ज्यों ही बाण कृष्ण के पैर में लगा एक ज्योति चमककर बूझ जाती है, बंसी की तान हिचकियाँ के साथ बार–बार उठकर टूट जाती है। अश्वत्थामा देखता है की

Created by Universal Document Converter

उसका शाप श्रीकृष्ण के पैर से फुट पड़ता है। सम्पूर्ण वन में वास युक्त नीले रक्त की दुर्गंध फैलजाती है।उसमें आस्था की जागृति होती है। श्री कृष्ण मृत्युलोक छोड़कर चले जाते हैं।

कृष्ण के प्रस्थान से अंधियारा और अधिक गहरा हो जाता है। भयंकर वन और अधिक भयंकर लगने लगता है। मानव मन पर अंधियारा गहरा होता जाता है। और कृष्ण की मृत्यु के साथ ही द्वापर युग का अंत हो जाता है तथा कलियुग के प्रथम चरण का पृथ्वी पर उदय होता है।

"बूझ गये सभी नक्षत्र, छा गया तिमिर गहन

वह और भयंकर लगने लगा भयंकर वन

जिस क्षण प्रभु ने प्रस्थान किया

द्वापर युग बीत गया उस क्षण

प्रभुहीन धरा पर आस्थाहत

कलियुग ने रखा प्रथम चरण

वह और भयंकर लगने लगा भयंकर वन।"[11]

पात्र एवं चरित्र चित्रण– अन्धा युग नाटक के अधिकांश ऐतिहासिक पात्रों का प्रतीकात्मक रूप से चित्रण किया है, नाटक मेंपात्रों के कोई न कोईविशिष्टमनोवृत्ति एवं दृष्टिकोण हैं।

श्री कृष्ण नाटक के धुरी चरित्र हैं। वह समग्र संसार में धर्म स्थापना हेतु युद्ध में पांडवों का पक्ष लेते हैं व अंधियारे पर विजय पाने का प्रयत्न करते हैं किंतु वह मानव मन पर बंधे अंधेपन की पट्टी को नहीं उतार पाते, स्वयं शाप ग्रस्तहोकर वन मे निवास करते हैं और अंत में साधारण व्याध द्वारा मारे जाते हैं।

अश्वत्थामा नाटक का महत्वपूर्ण पात्र है जो युद्ध में संत्रास झेलने वाले संपूर्ण वर्ग का प्रतिनिधित्व करता है। पिता की मृत्यु के कारण उसमें पशुता का उदय होता है, वह संपूर्ण संसार का नाश करने के लिए आतुर हो जाता है तथा समस्त पांडव कुल के अन्त हेतु नभ में ब्रह्मास्त्र छोड़ देता है। अश्वत्थामा के व्यक्तित्व में सहनशीलता देखने को मिलती है कृष्ण द्वारा शाप दिए जाने पर वह जीवन पर्यंत उसे झेलता है अश्वत्थामा मे आस्था का स्वरूप देखने को मिलता है जब कृष्ण उसका शाप स्वयं के ऊपर ले लेते हैं तब उस में आस्था का उदय होता है।

विदुर ऐसे विवेकशील बुद्धिजीवी पात्र हैं जो सत्य, असत्य, धर्मनीति का उचित ज्ञान रखते हुए भी कौरवों को अधर्म करने से नहीं रोक पाते और महाभारत जैसे युद्ध की स्थिति उत्पन्न हो जाती है। जब धृतराष्ट्र दुरूखी होकर अपना धीरज खोते है तब विदुर उन्हें सांत्वना देते हैं। स्वयं को प्रभु श्री कृष्ण को समर्पित करने के लिए कहते हैं। विदुरपूर्ण रूप से कृष्ण भक्ति में समर्पित हैं।

युयुत्सु ऐसे पात्र का प्रतिनिधित्व करता है जो बुद्धिजीवी व धर्म ज्ञानी होने पर अपने पक्ष को छोड़कर धर्म के पक्ष से युद्ध करता है। तत्पश्चात् उसे कुंठा संत्रास , आत्मग्लानी झेलनी पड़ती है। अर्थात् युद्ध के कारण धर्मज्ञाता को भी केवल हानि ही होती है, उन्हें घृणा व कुंठा का शिकार होना पड़ता है।

युधिष्ठिर और धृतराष्ट्र एक ऐसे वर्ग का प्रतिनिधित्व करते हैं, जो सत्ता के मोह में मदांध होकर सम्पूर्ण मानवजाति को खतरे में डाल देते हैं। धृतराष्ट्र मन–मस्तिष्क अंधेपन का प्रमाण देते हैं, जिसके कारण भयानक युद्ध की स्थिति उत्पन्न हो जाती है। युधिष्ठिर धर्म ज्ञानी होते हुए भी स्थिति में कोई परिवर्तन नहीं कर पाते और अंत में केवल कुंठा,संत्रास झेलते हैं।

गान्धारी समस्त माताओं का प्रतिनिधित्व करती है। गांधारी अपने पुत्रों मे उचित ज्ञान, धर्म, मर्यादित आचरण जैसे गुणों का विकाश करने में असफल रहती हैं जिस कारण उनके पुत्र चरित्र से पतित, आचरण हीन हो जाते हैं, और महाभारत जैसे युद्ध की स्थिति उत्पन्न होती है। जब गांधारी के समस्त पुत्र युद्ध में मारे जाते है, और उन्हें भीम, कृष्ण द्वारा दुर्योधन के बध में किये गये क्षल का आभास होता है तब वह कृष्ण को भी शाप दे देती है।

नाटक में प्रहरी सामान्य मनुष्य का प्रतीक है जो समस्त सामान्य मनुष्य का प्रीतिनिधित्व करते हैं, जिन्हें युद्ध से कोई लाभ नहीं होता। वह सिर्फ सत्ताधारियों की स्वार्थ लिप्सा का दुष्परिणाम भोगते हैं तथा युद्ध समाप्ति पर उन्हें कुछ प्राप्त नहीं होता।

Created by Universal Document Converter

देश, काल एवं वातावरण – अंधायुग नाटक की रचना एवं उसकी कथावस्तु,भारतीय संस्कृति की अमूल्य धरोहर है। महाभारत कालीन परिवेश, परिस्थिति एवं इससे उत्पन्न विसंगतियों के परितरू घूमती है। इसका कथानक पौराणिक मिथक को आधार बनाकर सृजित किया गया है। अन्धायुग नाटक की रचना 1954 में की गई उस समय दो विश्व युद्ध से उत्पन्न राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक, वैचारिक एवं मानवीय मूल्यों के विघटन का लेखक ने गहराई से अनुभव किया है। महाभारत के युद्ध के उपरांत उत्पन्न विसंगतियों एवं इस नाटक के रचना काल में उत्पन्न विसंगतियो में लेखक ने गति व समानताओं के आधार पर यथार्थ और कल्पना का समन्वय करते हुए अन्धायुग गीतिनाट्य का सृजन किया है। महाभारतकालीन पात्र कृष्ण, दुर्योधन, धृतराष्ट्र, गान्धारी , युयुत्सु, अश्वत्थामा, संजय, कृपाचार्य, कृतवर्मा आदि के अंतरद्वन्द्व का परिचय वर्तमान परिवेश में भी विभिन्न स्वरूपों में परिलक्षित हुआ है। धृतराष्ट्र और गान्धारी केवल नेत्र से ही अंधे नहीं है अपितु स्वार्थ लोलुपता और पुत्र मोह ने उनके अंतःकरण को भी अंधकार से आच्छादित कर दिया है। उनके मुँह और अदूरदर्शिता के सम्मुख श्री कृष्ण और विदुर की नीतियां भी पराजित हो जाती है। संपूर्ण प्रयास करने के पश्चात भी यह दोनों महाभारत के युद्ध नहीं रोक पाते। इसी प्रकार से दो ध्रुवों में बँटा हुआ विश्व, युद्ध की आग में जल उठता है। अतः देश, काल और वातावरण की दृष्टि से ये गीतिनाट्य पूर्ण रूप से अपने उद्देश्य में सफल हुआ है।

संवाद एवं कथोपकथन– कथोपकथन नाटक का महत्वपूर्ण अंग है। यह नाटक की कथा को गति प्रदान करता है।अन्धायुगनाटक में भारती जी ने गीति रूप में सरस व छोटे–छोटे संवादों का प्रयोग किया हैजो कथा को गति प्रदान करते हैं। नाटक में दो बूढ़े प्रहरी जिनका युद्ध से कोई विशेष संबंध नहीं है, आपस में वार्तालाप करते हैं तथा स्वयं को अधिक निराश और तटस्थ महसूस करते हैं। उनके संवाद सरस और प्रभावपूर्ण प्रतीत होते हैं।–

"प्रहरी १. ये सब

राजाओं के जीवन की शोभा हैं

प्रहरी २. वेजिनको ये सब प्रभु कहते हैं।

इस सबको अपने ही जिम्मे ले लेते हैं।

प्रहरी १. पर यह जो हम दोनों का जीवन

सुने गलियारे में बीत गया

प्रहरी २. कौन इसे

अपने जिम्मे लेगा?"[12]

युद्ध के परिणामों से धृतराष्ट्र अत्यधिक निराश और हताश हैं। विदुर उन्हें सांत्वना देते हैं कि वह दुरूखी न हो युद्ध के परिणामों का संजय के आने तक इंतजार करें । उसी बीच एक गूंगा प्रहरी घिसटता हुआ महल में प्रवेश करता है। विदुर के पाँव पकड़ कर उनसे चुल्लू भर पिलाने की मांग करता है। तब

""विदुर – क्या है ? ओह !

प्रहरी थोड़ा जल लाओ

धृतराष्ट्र – कौन है विदुर ?

विदुर – एक प्यासा सैनिक है महाराज !"[12]

इस प्रकार सरस और छोटे–छोटे, सरल संवादों से कथा को गति मिलती है तथा लेखक अपने उद्देश्य की पूर्ति में सफल होता है।

भाषा शैली –अन्धा युग नाटक की शैली **गीतिनाट्यशैली** है तथा इसमें सरल साधारण भाषा का प्रयोग किया गया है। नाटक में खड़ी बोली हिंदी के शब्द अधिक हैं, किंतु स्थान–स्थान पर संस्कृतनिष्ठ शब्दों का प्रयोग किया गया है जैसे–**'कुंजर', 'वृत्तियाँ','विगतज्वार','मातृवंचित', 'कुष्ठाग्रस्त', 'दुर्विनीत','अहंग्रस्त'**आदि। इस प्रकार नाटक की भाषा सरल होने से नाटक पाठक के मन पर अपना पूर्ण अधिकार कर लेता है तथा पाठक नाटक को अधूरा नहीं छोड़ पाता। नाटककार ने अन्धायुग की रचना इस ढंग से की है कि पाठक शुरू से अंत तक नाटक से जुड़ा रहता हैऔर नाटक के प्रत्येक पात्र उनकेसंवाद, भाषा एवंचरित्र आदिउसे पूर्ण रूप से प्रभावित करने में सफल होते हैं। इस प्रकार भारती जी को भाषा शैली दृष्टिकोण से पूर्ण सफलता प्राप्त हुई है।

Created by Universal Document Converter

अभिनय–मंचन की दृष्टि से नाटक पूर्ण रूप से सफल रहा है। नाटक मैं पत्रों की संख्या का विशेष ध्यान रखा गया है, जिससे नाटक के मंचन में सहायता मिलती है तथा दृश्यों में अधिक बदलाव की आवश्यकता नहीं होती । प्रत्येक पात्र के चरित्र की अलग विशेषता मंचन में सहायता प्रदान करती हैं। अश्वत्थामा वृद्ध याचक को दबोच कर घसीटता हुआ नेपथ्य पर ले जाकर उसकी हत्या कर देता है व नेपथ्य पर पूर्ण रूप से अंधकार हो जाता है एक प्रकाश किरण अश्वथामा पर पड़ती है।इस प्रकार से अभिनय की दृष्टि से नाटक अपने उद्देश्य की पूर्ति में सफल रहा है।

उद्देश्य–अन्धा युग गीति नाट्य के लिखने के पीछे भारती जीका उद्देश्य था कि युद्ध किसी भी परिस्थिति में हितकारी नहीं हो सकता। वह चाहे महाभारत का युद्ध हो, विश्व युद्धहो या दो देशों के मध्य युद्ध हो। युद्धसदैव अपने पीछे भय, भुखमरी, गरीबी, बीमारी, सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक विसंगतियों को जन्म देता है, जो महामानव के लिए कदापी कल्याणकारी नहीं हो सकता, इससे समस्त धरा पर धर्म, अर्थ का क्षय होता है–

"उस भविष्य में

धर्म–अर्थह्रसोन्मुख होंगे

क्षय होगा धीरे–धीरे सारी धरती का।

X X X

जनता उनसे पीड़ित होकर

गहन गुफाओं में छिप–छिपकर दिन काटेगी।"[14]

इसलिए इस नाटक में वर्णित गान्धारी,धृतराष्ट्रआदि पात्रों की तरह स्वार्थ,लिप्सा, पुत्रमोह एवं विवेक हीनता के वसीभूत होकर राज धर्म के विरुद्ध निर्णय नहीं लेना चाहिए क्योंकि राजधर्म सर्वोपरि होता है।इनका त्याग करके राजधर्म के प्रति उचित निर्णय लेना और राज्य की रक्षा करना राजा का परम धर्म एवं कर्तव्य होना चाहियेय अन्यथा भगवान कृष्ण जैसे राजनीतिज्ञ तथा विदुर जैसे धर्मनीतिज्ञ भी महाभारत जैसे युद्ध को होने से नहीं रोक सकते।

स्रोत :–

1. धर्मवीर भारती –अन्धा युग, पृष्ठ संख्या 2, कितब महल प्रकाशन नई दिल्ली–110002 संस्करण2023।
2. धर्मवीर भारती –अन्धा युग, पृष्ठ संख्या 8, कितब महल प्रकाशन नई दिल्ली–110002 संस्करण 2023।
3. धर्मवीर भारती –अन्धा युग, पृष्ठ संख्या 11, कितब महल प्रकाशन नई दिल्ली–110002 संस्करण 2023।
4. धर्मवीर भारती –अन्धा युग, पृष्ठ संख्या 12, कितब महल प्रकाशन नई दिल्ली–110002 संस्करण 2023।
5. धर्मवीर भारती –अन्धा युग, पृष्ठ संख्या 15, कितब महल प्रकाशन नई दिल्ली–110002 संस्करण 2023।
6. धर्मवीर भारती –अन्धा युग, पृष्ठ संख्या 29, कितब महल प्रकाशन नई दिल्ली–110002 संस्करण 2023।
7. धर्मवीर भारती –अन्धा युग, पृष्ठ संख्या 44, कितब महल प्रकाशन नई दिल्ली–110002 संस्करण 2023।
8. धर्मवीर भारती –अन्धा युग, पृष्ठ संख्या 75, कितब महल प्रकाशन नई दिल्ली–110002 संस्करण 2023।
9. धर्मवीर भारती –अन्धा युग, पृष्ठ संख्या 79, कितब महल प्रकाशन नई दिल्ली–110002 संस्करण 2023।
10. धर्मवीर भारती –अन्धा युग, पृष्ठ संख्या 81, कितब महल प्रकाशन नई दिल्ली–110002 संस्करण 2023।
11. धर्मवीर भारती –अन्धा युग, पृष्ठ संख्या 101, कितब महल प्रकाशन नई दिल्ली–110002 संस्करण 2023।
12. धर्मवीर भारती –अन्धा युग, पृष्ठ संख्या 17, कितब महल प्रकाशन नई दिल्ली–110002 संस्करण 2023।
13. धर्मवीर भारती –अन्धा युग, पृष्ठ संख्या 37, कितब महल प्रकाशन नई दिल्ली–110002 संस्करण 2023।
14. धर्मवीर भारती –अन्धा युग, पृष्ठ संख्या (1,2), कितब महल प्रकाशन नई दिल्ली–110002 संस्करण 2023।

Created by Universal Document Converter